नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

भारत की प्रथम नगरीय सभ्यता 'हड़प्पा' के सन्दर्भ में संगीत की रूपरेखा

डॉ. स्कंद मंजुल
डेंटियो आर्कयॉलॉजिस्ट, स्कूल ऑफ डेंटल साइंस,
शारदा यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा
ORCID iD : 0009-0005-9798-8012

डॉ. चित्रा शंकर
आर्क्यो म्यूजिकॉलॉजिस्ट,
दिल्ली

सार-संक्षेप

'हड़प्पा' जिसे सिन्धु-सरस्वती सभ्यता भी कहा जाता है, का विकास दक्षिण एशिया में भारत और पाकिस्तान में मुख्य रूप से तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों के आस-पास 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व के लगभग माना जाता है। वैश्विक परिपेक्ष्य में यह सभ्यता अब तक की चार प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। अब तक इस सभ्यता की लिपि को पढ़ा नहीं जा सका है, तथापि पुरावशेषों के आधार पर यह अपने सांस्कृतिक मूल्यों में संगीत की रूपरेखा को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध हो सकती है अर्थात् मूर्त प्रमाणों के द्वारा यहाँ संगीत को समझना होगा, लेकिन साथ में यह भी जानना होगा कि किन परिस्थितियों ने संगीत को विविध रूपों में ढलने के लिए प्रेरित किया। अतः यह सब जानने के लिए हड़प्पा सभ्यता के उन तमाम पहलुओं से पहले परिचित होना होगा जो पुरातत्व के क्षेत्र में जाकर ही अपना अर्थ ग्रहण कर पाते हैं। वर्तमान में हो रहे तत्संबंधी उत्खनन एवं शोध-कार्यों को भी यहाँ केन्द्रित करना अवश्यम्भावी हो जाता है, तब कहीं जाकर ही संगीत को व्यापक स्तर पर एवं किसी सभ्यता विशेष के सन्दर्भ में समझा जा सकता है।

मुख्य शब्द – हड़प्पा, सांस्कृतिक संदर्भ, सांगीतिक परिवेश, पुरावशेष, वैश्विक परिपेक्ष्य, उपयोगिता।

शोध-पत्र

हड़प्पा सभ्यता एवं संस्कृति

सिंधु-सरस्वती सभ्यता दुनिया की चार सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक है। इसके सांस्कृतिक अवशेष सर्वाधिक विस्तृत भूभाग में विस्तृत हैं। (गंगल, क., 846-852) सांस्कृतिक अवशेषों के आधार पर इसे मुख्यतः तीन चरणों में विभाजित किया गया है, यथा प्रारंभिक (Early), परिपक्व अथवा विकसित (Mature) एवं उत्तर (Late) हड़प्पीय। परिपक्व हड़प्पा काल सामान्यतः 2500-1900 ईसा पूर्व के बीच माना जाता है। (मंजुल, संजय कुमार, मंजुल, अरविन 3)

हड़प्पीय संस्कृति अपने विस्तृत क्षेत्र के बावजूद अनेक मापदंडों पर एकरूपता के कारण अपना विशेष स्थान रखती है। सुनियोजित नगर योजना, माप तौल प्रणाली की एकरूपता, मृदभांडों में समानता, स्थापत्य में प्रयोग की जाने वाली इंटों का अनुपातिकरण, सुनियोजित जलनिकास एवं संचयन, विस्तृत व्यापार, विशिष्ट लेखन परंपरा से संपन्न मुहर एवं उत्तम कलाकृतियों के लिए विशिष्ट है। उनके आंतरिक व्यापार में भी नदियों के माध्यम से अच्छी तरह से जुड़ी हुई प्रणाली थी और उनका समाज एक-दूसरे पर आधारित था। अनेक ऐसे पुरास्थलों का उत्खनन हुआ है जो अपने विशिष्ट व्यापारिक एवं उन्नत शिल्प के रूप में विकसित थे, उदाहरण के लिए उनके पास ऐसे स्थल थे जैसे 4MSR (बिनजोर), जो मुख्य रूप से ताम्र शिल्प का एक कारखाना था, जबकि राखीगढ़ी में मनके बनाने की कार्यशाला के प्रमाण मिले हैं और धौलावीरा में चूड़ियों एवं मनकों की कार्यशाला के साक्ष्य भी मिले हैं। इसके अतिरिक्त आंतरिक व्यापार के प्रमाण भी मिलते हैं जैसे कि विभिन्न स्थलों पर सामग्रियों का प्रसार यथा लैपिस के मनके, जो अफगानिस्तान क्षेत्र में ही पाए जाते हैं, हरियाणा के राखीगढ़ी एवं अनेक स्थलों पर पाए गए हैं।

हड़प्पावासियों ने न केवल नगर नियोजन में उत्कृष्टता दिखाई बल्कि कला और संस्कृति में भी। मूर्त और अमूर्त संस्कृतियाँ किसी भी समुदाय या समाज की चल और अचल धरोहर को प्रदर्शित करती हैं। संस्कृति लोगों के जीवन पर अपना अमूल्य प्रभाव छोड़ती है।

मूर्त कला में प्रमुख तौर पर जानवरों और मानवों की आकृतियाँ जिन्हें मुहरों पर उकेरा गया है शामिल हैं। इन मुहरों से स्पष्ट है कि हड़प्पावासी

प्रकृति के प्रति जागरूक थे, क्योंकि विषय रूप में इन पर विभिन्न जानवरों जैसे बैल, भैंस, पक्षी, कुत्ते, हिरण, मेढ़ों, हाथी, गैंडा, शेर और मगरमच्छ इत्यादि का भी चित्रण मिलता है। इसके साथ ही मिट्टी के बर्तन पर भी विभिन्न आकृतियां और डिजाइन देखे गए थे।

दक्षिण-पूर्व एशिया का मानचित्र जिसमें परिपक्व हड़प्पा काल के दौरान हड़प्पा संस्कृति के विस्तार को दर्शाया गया है (मानचित्र (Mcintosh, Jane 2008)

इसके अतिरिक्त विभिन्न सामग्रियों के मोती, जो अर्ध-मूल्यवान पत्थरों, तांबे, सोने, चांदी और यहाँ तक कि फैंस और स्टेटाइट जैसे पेस्ट से बने होते थे, देखे जा सकते हैं। मानव आकृतियों में विशेष रूप से आभूषण पहने हुए, डिजाइनर वस्त्रों में सजे हुए और विभिन्न प्रकार की हेयरस्टाइल के साथ देखा जा सकता है।

सांस्कृतिक संदर्भ में उपरोक्त विवरण यह दर्शाता है कि उनके बीच कला और संस्कृति विकसित थी। इसी क्रम में अध्ययन की दृष्टि से देखा जाए तो हड़प्पा संस्कृति में अमूर्त कलाओं, जैसे संगीत सम्बन्धी विषय पर व्यापक अध्ययन कम ही प्राप्त होता है। हालांकि हड़प्पावासी लेखन प्रणाली को जानते थे और मुहरों और पट्टिकाओं के रूप में लिपियाँ मिली हैं, लेकिन उन्हें अभी सफलतापूर्वक पढ़ा नहीं जा सका है, जिससे हड़प्पावासियों के इतिहास को समझने में एक खालीपन रह जाता है। फिर भी पुरातत्त्व की बदौलत हम उनके बारे में बहुत कुछ जान पाए हैं और जान रहे हैं। हड़प्पावासियों के संगीत को समझने के लिए भी पुरावशेषों के आधार पर हमें उनके समाज, संस्कृति और उनके द्वारा छोड़े गए अमूर्त साक्ष्यों का विश्लेषण करना होगा।

सांगीतिक परिवेश

हड़प्पा सभ्यता के विस्तार की सीमाएँ समग्र रूप में इस तथ्य की ओर इंगित करती हैं कि निसंदेह संगीत भी इस समृद्ध सभ्यता का एक अहम हिस्सा रहा होगा, चाहे दैनिक जीवन में या फिर व्यापक स्तर पर सामाजिक सन्दर्भ में भी। हड़प्पा जैसी उन्नत सभ्यता का सांगीतिक परिवेश उसके सांस्कृतिक सन्दर्भ से मुखरित हो जाता है। हड़प्पीय संस्कृति में संगीत किस प्रकार का था, इसके प्रमाण अत्यंत अल्प एवं क्षीण हैं किन्तु इस संस्कृति का सौंदर्यबोध निश्चि तरूप से उत्तम था। संगीत किस प्रकार का था इसके लिए वाद्ययंत्रों के चित्रण अथवा लघु प्रमाण, खिलौना इत्यादि के आधार पर अनुमान लगाया जा सकता है। मूर्तिशिल्प, हड़प्पीय मुहर, मृण्मय खिलौने संगीत कला की ओर इंगित करते हैं। कुछ मुहरों पर नृत्यरत युवतियों का अंकन भी संगीत की ओर इशारा करता है। धौलावीरा के उत्खनन में प्राप्त रंगभूमि तथा हाल ही में राखीगढ़ी में उत्खनित स्टेडियम सांस्कृतिक उत्सवों की ओर इशारा करते हैं।

अब समझने का विषय यह है कि हड़प्पा में संगीत किन-किन रूपों में विद्यमान रहा होगा। उनके पास पूर्व की सभ्यताओं का कोई अनुभव नहीं था क्योंकि सभ्यता के अर्थ में तो वही प्रथम थे, तथापि वह पूर्व में स्थापित हो चुके रीति-रिवाजों को ही यहाँ संशोधित करते हैं और उनका प्रयोग यहाँ निश्चित रूप से बड़े पैमाने पर करते हैं।

चित्र 1. मिट्टी की सीटी, सुषिर वाद्य (हड़प्पा - बनावली, हरियाणा, एक्सकैवेशंस ब्रांच-दिल्ली, OT-EXB-DL-483938)

चित्र 2. मिट्टी के झुनझुने, घन वाद्य (हड़प्पा - कालीबंगा, राजस्थान, आर्कयॉलॉजिकल म्युजिम कालीबंगा GM-KAM-RJ-1389071)

हड़प्पीय स्थलों से उत्खनित ऐसे पुरावशेष जो भौतिक साक्ष्यों के रूप में प्रत्यक्ष संगीत को प्रमाणित करते हैं और हड़प्पा के प्रारंभिक चरण से सम्बंधित हैं उनमें मिलने वाली सीटियाँ अर्थात् सुषिर वाद्य वर्ग के प्रकार शामिल हैं। यह आकार में कई विभिन्नता रखते हैं, जैसे कि कुछ सीटियाँ पक्षी के आकार की हैं। संभवतः पक्षियों की मधुर आवाज को इन सीटियों के माध्यम से उतारने की कोशिश की गई होगी। इस संस्कृति के लोगों ने शंख एवं सीपियों के प्रयोग में महारत हासिल कर ली थी। ऐसा लगता है विशिष्ट शंखों का प्रयोग भी मधुर ध्वनियों के लिए करते थे। यह उल्लेखित है कि कालीबंगा, राखीगढ़ी, बिनजोर से यज्ञवेदी के प्रमाण मिले हैं और वैदिक पूजा विधान में शंख अपना महत्त्व रखता है। अनुमानतः बांसुरी जैसे वाद्य लकड़ी के प्रयोग से बनते होंगे जिनके अवशेष मिलना संभव नहीं है। इसी क्रम में झुनझुने अर्थात् घन वाद्य वर्ग की श्रेणी के साक्ष्य भी मिलते हैं। यह मिट्टी के बने हुए हैं, जिनके अन्दर कंकर इत्यादि को ध्वनि उत्पत्ति के लिए प्रयोग किया गया है।

इन दोनों वर्ग के वाद्यों को अधिकतर खिलौने कहा गया है। हालाँकि इसकी पहचान खिलौने के तौर पर की गई है किन्तु निश्चय ही यह एक वाद्ययंत्र है। सामूहिक रूप से इसका प्रयोग मधुर ध्वनि उत्पन्न करता है। इस खिलौने से स्पष्ट समझा जा सकता है कि लकड़ी में भी इसका प्रयोग किया जाता होगा, किन्तु यह सुरक्षित नहीं बच पाया। जोनाथन

मार्क केनोयर लिखते हैं 'संगीत वाद्ययंत्र बच्चों के लिए भी बनाये जाते थे। सिन्धु सभ्यता के मुख्य क्षेत्रों के अधिकांश स्थलों पर छोटे तित्तर या कबूतर के आकार की टेराकोटा की झनझनाहट और सीटी पाई गई हैं। आज पाकिस्तान के पारंपरिक समुदायों में बाजीगर अक्सर प्रदर्शन करते समय शोर करने के लिए झनझनाहट का उपयोग करते हैं और पक्षी सीटी का उपयोग अक्सर पालतू पशुओं को पुकारने के लिए किया जाता है। (केनोयर, 133)

चित्र 3. अवनद्ध वाद्य सदृश्य, (जोशी, जगतपति एवं आसको परपोला-संपादक, कॉर्पस ऑफ इंडस सीलस एंड इन्स्क्रिप्शन, भाग-एक 1987, संख्या-H-182 A/B)

अगली श्रेणी में ऐसे वाद्यों के साक्ष्य आते हैं जो भौतिक तो नहीं हैं तथापि उसके बहुत नजदीक हैं अर्थात् उनके आकार के आधार पर उनकी पहचान संभव है। यह परिपक्व हड़प्पा सभ्यता से सम्बंधित हैं। एक मुद्रा पर अंकित अवनद्ध वाद्य सदृश्य प्रकार इसका प्रमुख उदाहरण है। अध्ययन के आधार पर हम जानते हैं कि अवनद्ध वाद्य लकड़ी के बने होते हैं और उन पर चमड़ा चढ़ाया जाता है। यह सामग्री वातावरण में इतने लम्बे समय तक नहीं टिक सकती जितनी की उपरोक्त वाद्य सामग्री, इसलिए इनके प्रमाण मिलना असंभव है।

चित्र 4 धनुषाकार आकृति (तंत्री वाद्य?) वही, संख्या-M-73

वाद्यों के चतुर्थ प्रकार अर्थात् तत वाद्य सदृश्य रूप भी हमें मुद्राओं पर ही मिलता है। प्रथम रूप में तो यह मुद्राओं पर मिलने वाली लिपि का एक हिस्सा है, लेकिन यह धनुषाकार है और इसमें प्रत्यंचा के समानांतर अन्य तारों को भी दिखाया गया है, जिससे यह धनुषाकार तंत्री वाद्य सदृश्य दिखती है, बी. सी. देव ने इसे यही माना है। (देव, 80) यह सत्य है कि वर्तमान परिस्थिति में इसे लिपि का ही हिस्सा मानने से भी इंकार नहीं किया जा सकता, लेकिन यह कहा जाता है कि यह लिपि सांकेतिक लिपि है तो ऐसे में यह भी हो सकता है कि यह चिह्न तत्कालीन सांस्कृतिक सम्पन्नता का कोई प्रतीक चिह्न रहा हो। संगीत के उपरोक्त साक्ष्यों के अतिरिक्त नृत्यरत मूर्तियाँ, बर्तनों पर की गई चित्रकारी इत्यादि में भी संगीत के प्रमाण मिलते हैं। जैसे कि नृतकी जिसे डांसिंग गर्ल (ऐनुयल रिपोर्ट 1926-27, आर्कयोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, PL. XII) के नाम से जाना जाता है, हड़प्पा सभ्यता की पहचान है।

उपरोक्त उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर जो मुख्य तथ्य सामने आता है, वह यह कि सिंधु-सरस्वती सभ्यता एक महान एवं उन्नत सभ्यता रही, जिसमें अमूर्त कला को तलाशना एक कठिन कार्य है। किन्तु कुछ मूर्त प्रमाण संगीत कला की ओर इंगित करते हैं। उपलब्ध सांस्कृतिक अवशेषों में दृष्टव्य सौन्दर्यबोध एवं उत्तम कलात्मकता उनकी समझ को दर्शाती है। लिखित साक्ष्यों की अनुपलब्धता के कारण इस विषय पर अभी तो ज्यादा कुछ कहा नहीं जा सकता, लेकिन फिर भी इतना समझा जा सकता है कि हड़प्पावासी संगीत के अच्छे जानकर रहे होंगे। निश्चितरूप से जब यह लिपि पढ़ ली जाएगी, तब हम इसके बारे में और भी बहुत कुछ जान पाएँगे।

सभ्यता के स्तर पर संगीत किस रूप में रहा होगा यह विषय अपने आप में बहुत रोमांचक है, जैसे कि व्यापक दृष्टिकोण से देखने पर हड़प्पावासियों का संगीत जानकार होना तत्कालीन सामाजिक परिवेश में संगीत की स्थिति को समझने में सहायता प्रदान करता है।

हड़प्पा सभ्यता के पुरावशेषों में उपलब्ध कलात्मक पुरावशेष वहाँ के कला कौशल पर प्रकाश डालते हैं, जिसका सीधा सा अर्थ है कि प्रत्येक कला को सीखने-सिखाने की कोई परंपरा सामाजिक स्तर पर अवश्य रही होगी। संगीत के संदर्भ में विचार करें तो न केवल संगीत सिखाया जाता होगा बल्कि वाद्य-निर्माण कला का भी प्रशिक्षण दिया जाता होगा। संभवतः संगीत विद्यालय भी अवश्य रहे होंगे, ऐसा मानने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होनी चाहिए।

संगीत के सामाजिक स्तर का सबसे बड़ा और उम्दा उदाहरण है स्टेडियम, जिसे सीधे तौर पर समूह बैठकों और सामाजिक सभाओं से जोड़ा जा सकता है। संभवतः यहाँ खेल भी खेले जाते होंगे, जिसमें संगीत उसका सहचर होकर भी विचरण करता होगा और पृथक् रूप से भी संगीत प्रदर्शन होता होगा, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है। स्टेडियम का होना इस तथ्य को इंगित करता है कि यहाँ समारोह इत्यादि बहुत बड़े स्तर पर भी हुआ करते थे। स्टेडियम में दूर-दूर बैठे दर्शकों तक आवाज को पहुँचाने के लिए ऐसे वाद्यों का प्रयोग किया जाता होगा जिनकी आवाज दूर तक जा सकती हो। हड़प्पा सभ्यता में स्टेडियम का सबसे पहले उल्लेख धौलावीरा, गुजरात में मिलता है। (बिष्ट) हड़प्पा के पाँच प्रमुख स्थलों में शुमार राखीगढ़ी, हरियाणा में अभी हाल ही में डॉ. मंजुल द्वारा की गई खुदाई में हड़प्पा के सन्दर्भ में सबसे बड़े स्टेडियम के प्रमाण मिले हैं। (मंजुल) इसके अतिरिक्त पद्मश्री आर.एस.बिष्ट ने कहा है कि इस तरह के स्टेडियम को मोहनजोदड़ो, कालीबंगा और हड़प्पा में भी देखा जा सकता है। (बिष्ट) यह इंगित करता है कि हड़प्पा

के सभी प्रमुख स्थलों पर एक स्टेडियम था और वहाँ पर सांस्कृतिक एवं खेल आयोजनों की सामान्य प्रथा थी।

हड़प्पा सभ्यता के लोगों का धर्म क्या था, स्पष्टता से इस विषय पर कुछ कहा नहीं जा सकता, लेकिन अवशेषों के आधार पर विद्वानों का यह मानना है कि तत्कालीन पुरातात्विक स्त्रोत्रों से धार्मिक विश्वासों एवं मान्यताओं पर भी प्रकाश पड़ता है, जैसे कि पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा पशुपति की मोहर, मातृ देवी की मूर्तियाँ, अष्टकोण यष्टि, पाषाण मुद्राओं पर अंकित वृक्ष तथा पत्तियों को वृक्ष पूजा या प्रकृति पूजा के विश्वास के सन्दर्भ में देखना, इसी प्रकार पशु-पक्षियों के अंकन को शक्ति का प्रतीक मान कर उनमें दैवी अंश को मानना इत्यादि।

चित्र 6. सप्तमात्रिका मोहर (जोशी, जगतपति एवं आसको परपोला-संपादक, कॉर्पस ऑफ इंडस सीलस एंड इन्स्क्रिप्शन, भाग-2)

इसी में से हम यहाँ एक मोहर का उदाहरण लेते हैं, पुरातत्वविद् डॉ. संजय कुमार मंजुल इसकी नवीन व्याख्या संगीत के परिपेक्ष्य में करते हैं। उनका कहना है कि इसमें एक अनुष्ठानिक क्रिया को दर्शाया गया है, जिसमें स्त्रियों द्वारा पंक्तिबद्ध समूह नृत्य किया जा रहा है। (मंजुल) इसी प्रकार ऐसे और भी प्रकार के उदाहरण हैं जिनसे धर्म और संगीत को जोड़ के देखा जा सकता है।

हड़प्पा सभ्यता के पुरावशेषों में मनोरंजन के अनन्य साधनों के साथ ऐसे साधन भी मिलते हैं जो संगीत से जुड़े हैं। सांगीतिक खिलौनों के रूप में ध्वनि का प्रयोग मनोरंजन की दृष्टि से किया जाना, ध्वनि के तकनीकी विकास के नजरिए से मानव के प्रबुद्ध मस्तिष्क का परिचायक है। उत्खनन में मिलने वाली सीटियाँ तथा झुनझुने इसके प्रत्यक्ष साक्ष्य हैं।

उपर्युक्त साक्ष्यों के अतिरिक्त पुरातात्विक परिपेक्ष्य में संगीत की रूपरेखा को समझने के लिए उन तथ्यों को चिह्नित करना भी आवश्यक है जो अप्रत्यक्ष तौर पर संगीत से जुड़ी महत्त्वपूर्ण जानकारी देते हैं।

हड़प्पा सभ्यता के सन्दर्भ में पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा नवीन पुरातात्विक खोजों के आधार पर यह स्वीकार किया जा चुका है कि जिस संस्कृति के बारे में हम वैदिक साहित्य में पढ़ते हैं वह हड़प्पा संस्कृति से मेल खाती है अर्थात् कहने का भाव है कि हड़प्पावासी ही वैदिक थे। (वही) इस आधार पर हम अपने विषय की बात करें तो यह बहुत बड़े बदलाव का संकेत है, लेकिन यह तभी फलीभूत हो सकेगा जब हम पुरातत्त्व को और हड़प्पा सभ्यता को बखूबी जानें। ऐसी खोजें जब वैश्विक परिपेक्ष्य में किसी बड़े बदलाव को जन्म देती हैं, तब हम उसकी संस्कृति के अंतर्गत संगीत को भी महत्त्वपूर्ण दृष्टि से देखते हैं और समझते हैं। इससे संगीत विषय का इतिहास भी संशोधित होता है।

वर्तमान संदर्भ में उपयोगिता

भारतीय इतिहास में हड़प्पा प्रथम नगरीय सभ्यता है, इस दृष्टि से यह भारतीय संगीत इतिहास में भी नगरीय संगीत का प्रथम अध्याय है। अभी हाल ही में हड़प्पा की खोज को सौ वर्ष पूरे हुए हैं। तब से लेकर अब तक भारतीय ही नहीं वैश्विक स्तर पर इस सम्बन्धी शोध कार्य निरंतर हो रहे हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र के सम्बन्ध में भारतीय संगीत इतिहास की प्रचलित परंपरा में इसका क्या स्थान है इस पर बात करना भी आवश्यक हो जाता है।

भारतीय संगीत इतिहास की पुस्तकों में हड़प्पा सभ्यता जिसे प्रागैतिहास और इतिहास के मध्य की कड़ी के रूप में आद्यैतिहास के नाम से जाना जाता है, का अस्तित्व पथ-भ्रमित करने वाले विचारों से ग्रस्त दिखाई देता है। (चित्रा शंकर) उनमें से एक को हम यहाँ विषय के स्पष्टीकरण के उदाहरनार्थ लेते हैं, ठाकुर जयदेव कृत 'भारतीय संगीत का इतिहास' अध्याय 2 में 'सिंधु सभ्यता के काल में भारतीय संगीत' में कहा गया है कि–'खुदाई से हड़प्पा, मोहनजोदड़ो इत्यादि स्थानों में उस समय के स्नानागार, बस्ती, योगी इत्यादि की मूर्तियाँ, भिन्न-भिन्न प्रकार के आभूषण, खिलौने, पकी मिट्टी की मोहर, बटखरे इत्यादि मिले हैं। उन सबका यहाँ वर्णन अप्रासंगिक होगा।' हड़प्पा सभ्यता का जो वर्णन पीछे किया गया है, ऐतिहासिक और सांगीतिक साक्ष्यों दोनों के सम्बन्ध में उसे प्रस्तुत विचार की तुलना में विशेषकर एक संगीत विद्यार्थी कैसे देखेगा, यह एक गंभीर एवं विचारणीय विषय है।

1921 ईस्वी सन् में सामने आई हड़प्पा सभ्यता की पहचान इन्ही पुरावशेषों के आधार पर की गई है, जिन्हें संगीताचार्य ने अप्रासंगिक कह के नकार दिया, यदि आप इन्हें प्रासंगिक नहीं मानते तो हड़प्पा सभ्यता कोरी कल्पना के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह जाता। 'जबकि अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट है कि वास्तविकता ठीक इसके विपरीत है। (चित्रा शंकर)

भारतीय संगीत इतिहास की ऐसी अवधारणाओं के प्रभाव से ही अभी तक भी हड़प्पा सभ्यता के संगीत की पहचान नहीं के बराबर है। जिन विद्वानों ने प्राचीनतम सभ्यताओं का हवाला दिया भी है, तो वह स्पष्ट नहीं है, जिसके परिणामस्वरूप विषय के केंद्र को पकड़ पाना संभव नहीं दिखता है। अतः शोध की दृष्टि से यह क्षेत्र भारतीय संगीत इतिहास का एक कम जाना गया पहलू साबित होता है, जिसमें शोध की अनंत संभावनाएँ हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत विषय इस तथ्य का समर्थन करता है कि भारत की प्रथम नगरीय सभ्यता के तौर पर 'हड़प्पा' पुरावशेषों के आधार पर अपने सांस्कृतिक मूल्यों में संगीत की रूपरेखा को सपष्ट करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। जहाँ मूर्त प्रमाणों के द्वारा तत्कालीन संगीत को समझना होगा वहाँ यह भी जानना होगा कि किन परिस्थितियों ने संगीत को विविध रूपों में ढलने के लिए प्रेरित किया। अतः यह सब जानने के लिए हड़प्पा सभ्यता के उन तमाम पहलुओं से पहले परिचित होना होगा जो पुरातत्त्व के क्षेत्र में जाकर ही अपना अर्थ ग्रहण कर पाते हैं। वर्तमान में हो रहे तत्संबंधी उत्खनन एवं शोध-कार्यों को भी यहाँ केन्द्रित करना अवश्यम्भावी हो जाता है, तब कहीं जाकर ही संगीत को व्यापक स्तर पर एवं किसी सभ्यता विशेष के संदर्भ में समझा जा सकता है।

कृतज्ञता

प्रस्तुत शोध विषय के स्पष्टीकरण के लिए हम अपने पुरातत्त्व गुरु डॉ.संजय कुमार मंजुल जी के दिए गए मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं।

संदर्भ सूची

1. गंगल, क., स्पेटियो टेम्पोरल एनेलाईसिस ऑफ इंडस अर्बनाईजेशन, करंट साइंस, 98: पृ.846-852
2. मंजुल, संजय कुमार, मंजुल, अरविन, एक्सकैवेशंस ऐट 4 एम् एस आर (बिनजोर) डिस्ट्रिक्ट श्रीगंगानगर, राजस्थानः ए हड़प्पन इंडस्ट्रीयल सेटलमेंट, एन. के. संजय आचार्य अशोकश्री, पृ. 3
3. मानचित्र (McIatosh, Jane (2008)
4. हड़प्पा - बनावली, हरियाणा, एक्सकैवेशंस ब्रांच-II दिल्ली, OT-EXB-DL-483938
5. हड़प्पा - कालीबंगा, राजस्थान, आर्कयॉलॉजिकल म्युजिम कालीबंगा GM-KAM-RJ- 1389071
6. केनोयर, जोनाथन मार्क, सिन्धु घाटी सभ्यता के प्राचीन नगर, अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ पाकिस्तान स्टडीज, प्रकाशक- ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कराची/अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ पाकिस्तान स्टडीज, 1998, पृ. 133
7. जोशी, जगतपति एवं आसको परपोला-संपादक, कॉर्पस ऑफ इंडस सीलस एंड इन्स्क्रिप्शन, भाग-एक 1987, संख्या-H-182 A/B, पृ. 209
8. वही, संख्या-M-73 A, पृ. 32
9. देव, बी. सी., म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट, अनुवादक-अलका पाठक, प्रकाशक- नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत, संस्मरण- 1993, पृ. 80
10. ऐनुयल रिपोर्ट 1926-27, आक्रियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, PL. XII
11. साक्षात्कार-बिष्ट, आर, एस., (रिटायर्ड) संयुक्त महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, मंजुल, संजय कुमार, अपर महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, राखीगढ़ी उत्खनन स्थल, 2.4.2023
12. साक्षात्कार-मंजुल, संजय कुमार, पुरातत्ववेत्ता, अपर महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, तिथि- 17.9.2024
13. बिष्ट, आर.एस., (5.10.2024) व्याख्यान- व्हाट्स मेक ए सिविलाइजेशन? अर्बन पाराडीगम्स एंड कल्चरल सिग्नीफायरस इन दी ब्रोंज ऐज हड़प्पा, दिल्ली, हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।
14. जोशी, जगतपति एवं आसको परपोला- संपादक, कॉर्पस ऑफ इंडस सीलस एंड इन्स्क्रिप्शन, भाग-2, संख्या-M1186, पृ. 139
15. साक्षात्कार- मंजुल, संजय कुमार, पुरातत्त्ववेत्ता, अपर महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, तिथि-17.9.2024
16. वही
17. शंकर, डॉ. चित्रा, भारतीय संगीत इतिहास पर पुनर्विचार, वाल्यूम-9 अक्टूबर 2021, संपादक- प्रो. रवि शर्मा, नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एंड म्युजिक, दिल्ली-110092, पृ. 85-88
18. शंकर, डॉ. चित्रा, भारतीय संगीत इतिहास में आद्यैतिहासिक युग- पुरातात्विक संदर्भ, संपादक- डॉ. मनोज कुमार, डॉ. गोविन्द वल्लभ, रीविसिटिंग दी इंडियन हिस्ट्री इन द लाईट ऑफ आर्कयॉलॉजिकल एंड टेक्स्च्युअल एविडेंस, पृ. 23